हमारी संस्कृति में छिपे हैं आर्थिकी के बीज

महाकुंभ

विनोद पाठक

स्वतंत्र पत्रकार

भारत को धार्मिक स्थलों और मेलों का देश कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक सैकड़ों छोटे-बड़े मेले लगते हैं। 5000 से अधिक धार्मिक स्थल हैं। भारत ही नहीं, दुनिया भर में धार्मिक स्थल और मेले अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने के केंद्र बिंदु हैं। भारत के करीब-करीब सभी राज्यों में अनेक बड़े धार्मिक स्थल हैं, जो राज्य की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अभी अयोध्या और काशी में ही देखा गया, वहां से किस तरह से उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एकाएक बूस्टर डोज मिला है। गुजरात, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु जैसे राज्यों में मंदिरों से होने वाली आय राज्य सरकार को बड़ा संबल प्रदान कर रही

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज शहर में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर इन दिनों दुनिया का सबसे बड़ा अस्थाई शहर बस चुका है। इसी अस्थाई शहर में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक दुनिया का सबसे बड़ा मेला महाकुंभ आयोजित होने जा रहा है। 4200 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले महाकुंभ मेला क्षेत्र में न केवल भारत, बल्कि दुनिया भर से श्रद्धालु और पर्यटक पहुंचना शुरू हो चुके हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का दावा है कि 40-45 करोड़ श्रद्धालु और पर्यटक इस बार महाकुंभ मेले में आएंगे। यही कारण है कि छोटी से लेकर बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियों की नजरें महाकुंभ मेले पर हैं। महाकुंभ मेले की तैयारियों पर केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने भी भरी राशि का निवेश किया है। अनुमान है कि महाकुंभ मेले से न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिलने वाली है।

भारत को धार्मिक स्थलों और मेलों का देश कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक सैकड़ों छोटे-बड़े मेले लगते हैं। 5000 से अधिक धार्मिक स्थल हैं। भारत ही नहीं, दुनिया भर में धार्मिक स्थल और मेले अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने के केंद्र बिंदु हैं। भारत के करीब-करीब सभी राज्यों में अनेक बड़े धार्मिक स्थल हैं, जो राज्य की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में भूमिका निभा रहे हैं। अभी अयोध्या और काशी में ही देखा गया, वहां से किस तरह से उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एकाएक बूस्टर डोज मिला है। अयोध्या में पिछले वर्ष जनवरी से सितंबर तक 13.56 करोड़ लोग दर्शन करने पहुंचे थे, जबकि इसी अवधि में आगरा में 12.51 करोड़ लोग ताजमहल को देखने के लिए पहुंचे थे। इस बार नववर्ष के पहले ही दिन 8 लाख लोग काशी विश्वनाथ कॉरिडोर में दर्शनों को पहुंच गए। गुजरात, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु जैसे राज्यों में मंदिरों से होने वाली आय राज्य सरकार को संबल प्रदान कर रही है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश समेत अन्य राज्यों में बड़े मेले लगते हैं। प्रयागराज में महाकुंभ मेले के लिए केंद्र और राज्य सरकार ने करीब 15,000 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया है। 566 प्रोजेक्ट्स चलाए हैं।

मेला क्षेत्र को बसाने में 21 विभाग शामिल

मेला क्षेत्र को बसाने में 21 विभागों की भागीदारी रही है। इस बार मेले का आकार भी बढ़ाया गया है। वर्ष 2019 के अर्द्धकुंभ में 3200 हेक्टेयर में मेला क्षेत्र था, जो इस बार 4200 हेक्टेयर हो गया है। सेक्टरों की संख्या 20 से बढ़कर 25 हो गई है। घाटों की लंबाई 8 किलोमीटर से बढ़कर 12 किलोमीटर हुई है। श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए 1850 हेक्टेयर में पार्किंग बनाई गई है। पांटून पुल की संख्या 22 बढ़ाकर 30 की गई है।

डेढ़ लाख अस्थाई और 1.5 लाख अस्थाई और 500 स्थाई शौचालय बनाए गए हैं। मेला क्षेत्र में पौने दो लाख से अधिक टेंट लगे हैं और 25,000 लोगों के रहने की व्यवस्था की गई है। 67,000 एलईडी लाइट्स मेला क्षेत्र को दूधिया रोशनी प्रदान कर रही हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने 7260.45 करोड़ रुपए का बजट जारी किया है, जिससे 441 प्रोजेक्ट और 125 डिपार्टमेंटल प्रोजेक्ट्स पूर्ण हुए हैं। इनमें 75 प्रतिशत पर स्थाई स्ट्रक्चर हैं। सबसे अधिक 42 प्रतिशत बजट पुल और रोड के डेवलपमेंट पर खर्च हुआ है।

2 लाख करोड़ की आर्थिक वृद्धि का दावा

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दावा किया कि महाकुंभ मेले से राज्य में 2 लाख करोड़ रुपए की आर्थिक वृद्धि दर्ज होगी। वर्ष 2019 के कुंभ ने राज्य की अर्थव्यवस्था में 1.2 लाख करोड़ रुपए का योगदान दिया था। उत्तर प्रदेश सरकार को महाकुंभ मेले से 25,000 करोड़ रुपए का सीधे राजस्व की प्राप्ति होगी, जो किराए, सेवा शुल्क और टैक्स के रूप में मिलेगा। छोटे दुकानदार से लेकर होटल इंडस्ट्री, ट्रांसपोर्टेशन, फूड इंडस्ट्री, रिटेल टूर एंड ट्रैवल, गारमेंट जैसे अनेक सेगमेंट्स को फायदा मिल रहा है। महाकुंभ मेले क्षेत्र में बसी टेंट सिटी में 2000 से लेकर 80,000 रुपए तक के लक्जरी टेंट उपलब्ध हैं। केवल महाकुंभ मेले की तैयारियों से 45,000 से अधिक परिवारों को सीधा रोजगार मिला है। देशभर में महाकुंभ मेले से लोगों को रोजगार और आर्थिक लाभ हो रहा है। इतिहास पर नजर डालें तो वर्ष 1882 में ब्रिटिश सरकार के समय प्रयागराज में कुंभ मेले के आयोजन पर सरकारी कोष से 20,228 रुपए खर्च हुए थे, जबकि 49,846 रुपए की आमदनी के साथ 29,612 रुपए का लाभ सरकार को हुआ था। केंद्र सरकार के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में देश में धार्मिक पर्यटन के लिए 67.7 करोड़ लोग निकले थे, यह संख्या वर्ष 2022 में 143.9 करोड़ तक पहुंच गई। वर्ष 2022 में धार्मिक पर्यटन से राजस्व 7.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 16.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

श्रद्धालुओं-पर्यटकों को लुभाने में जुटे ब्रांड

वर्ष 2023 में भारत में धार्मिक पर्यटन मार्केट 1172.1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का था, जो वर्ष 2024 से 2032 के बीच 17.75 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़कर 5102.3 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकता है। धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं और पर्यटकों को लुभाने के लिए छोटे-बड़े ब्रांड जुटे हैं। रिटेल स्टेट सलाहकार सीबीआरआई ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया कि तिरुपति, पुरी, अमृतसर, अजमेर जैसे मझले आकार के शहरों में रिटेल ब्रांड अपने प्रॉडक्ट्स को उतार चुके हैं। अमृतसर, अजमेर, कटरा, सोमनाथ, वाराणसी, शिरडी, पुरी, अयोध्या, मथुरा, तिरुपति, हारका, बोधगया, गुरुवयूर और मदुरै में आध्यात्मिक पर्यटन में वृद्धि का लाभ रिटेल ब्रांड उठा रहे हैं। दुनिया की सभी बड़ी फूड इंडस्ट्रीज भारत में धार्मिक पर्यटन स्थलों पर रुख कर चुकी हैं।

महाकुंभ में पहली बार उच्च तकनीक का प्रयोग

वर्ष 2014 में देश की सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धार्मिक स्थलों के विकास पर खास जोर दिया है। धार्मिक स्थलों के पुनरुद्धार और कनेक्टिविटी पर सरकार बहुत तेजी से काम कर रही है। स्वदेश दर्शन और प्रसाद जैसी कई योजनाओं के माध्यम से 120 परियोजनाएं चलाई गई हैं, जिन पर 6800 करोड़ रुपए से अधिक खर्च हुए हैं। देश में 1.5 लाख किलोमीटर का रोड नेटवर्क बिछाया जा चुका है। 500 से अधिक नए हवाई मार्ग और 150 से अधिक नए एयरपोर्ट्स से एयर कनेक्टिविटी में बढ़ोतरी हुई है। 100 से अधिक पर्यटक इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं पिछले 10 साल में पूरी की गई हैं। महाकुंभ का प्रचार भारत समेत दुनियाभर में केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार कर रही है, ताकि अधिक से अधिक लोगों को तीर्थराज प्रयाग में लाया जा सके। पहली बार महाकुंभ में उच्च तकनीक का प्रयोग हो रहा है। डिजिटल एक्सपीरियंस सेंटर से लेकर कुंभ सहायक चैटबॉट, जो 11 भारतीय भाषाओं में संवाद में सक्षम है, को लॉन्च किया गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लैस फेस रीडिंग कैमरे लगाए गए हैं। एंटी ड्रोन सिस्टम एक्टिवेट किया गया है। टॉयलेट सफाई से लेकर पुलिस व्यवस्था के लिए एप्स बनाए गए हैं। पहली बार दुनिया में किसी अस्थाई शहर में गूगल नेविगेशन की सुविधा दे रहा है। पिछले दिनों जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रयागराज आए थे और गंगा पूजन किया था, तब उन्होंने महाकुंभ को महापर्व कहा था। अगले 45 दिनों में इसी महापर्व में विश्व का सबसे बड़ा मानवों का एकत्रीकरण होने वाला है। 6 बड़े स्नान पर्वों पर करोड़ों लोग पावन गंगा, यमुना व सरस्वती की त्रिवेणी में डुबकी लगाएंगे और यह डुबकी देश की अर्थव्यवस्था को एक नया मार्ग दिखाने वाली होगी। यह आध्यात्मिक - सांस्कृतिक रूप से देश को और आगे बढ़ाने वाली होगी। महाकुंभ केवल स्नान और पुण्य कमाने का पर्व नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश व देश की इकोनॉमी को नई दिशा और नई गति देने वाला भी होगा। असंगठित क्षेत्र में लगभग एक लाख नई नौकरियां मिल चुकी हैं, जिनमें टूर गाइड, टैक्सी ड्राइवर, दुभाषिये, स्वयंसेवक, नाविक आदि शामिल हैं। महाकुंभ से प्रयागराज मेला प्राधिकरण को लगभग 2000 करोड़ रुपए की आय होगी। विज्ञापन से 30 करोड़, पार्किंग स्थलों से 55 करोड़, यात्री निवासों से 30 करोड़, कामर्शियल प्लाटों की बिक्री से लगभग 100, दुकानों से 60 करोड़ रुपए की आय हो रही है। इसके अलावा विभिन्न होटल कंपनियों, रेस्टोरेंट, वेडिंग जोन, प्रदर्शनियों में होने वाले उत्पादों की बिक्री से भी 250 करोड़ रुपए आय की उम्मीद है।